

स्थाय दैत्यः पुष्यति विग्रहम् HARIV. 3129. 8244. R. 2, 94, 10 (103, 40 GORR.). 6, 2, 48. RAGH. 3, 32, 4, 11, 9, 5, 16, 58. KUMĀRAS. 1, 25, 7, 18, 78. ÇĀK. 18, 10, 6. MĀLAV. 12, 21, 10, 63, 20. MEGH. 78. SPR. 1726. मैत्रीमशेषभूतानि पुष्यन्तु सकले जने MĀRK. P. 118, 14. SĀH. D. 51, 4. med.: एकं पुष्यमाषौ शिशुव्रतम् HARIV. 3438. नापुष्यन्त श्रियं वृत्ता निराशा इव निर्धनाः R. 5, 16, 20. seltener पुष्नाति in dieser Bed.: नक्षीश्वरव्याकृतयः कदाचित्पुष्नाति लोके विपरीतमर्थम् KUMĀRAS. 3, 63. पुष्नाति विश्वनगरः किल दम्भमयम् DBĪRTAS. 70, 12. Mit पोषम् (पुष्टिम्, वृद्धिम्) verbunden: सक्तपोषं पुष्यम् VS. 4, 26. स एतान्पोषां अपुष्यत् TS. 7, 1, 9, 1. PAÑĀV. Br. 8, 4, 4. 19, 5, 10. 21, 10, 7, 9. SHADY. Br. 3, 7. सूचो लः पोषमास्ते पुष्यन् 80 v. a. dem Einen strömt eine Fülle von Liedern zu RV. 10, 71, 11. यस्मिन्पुष्यन्नुदिते समग्रो पुष्टिं जनाः RAGH. 18, 31. शुभैः शरीरावष्वैर्दिने दिने पुषाष वृद्धिम् 3, 22. — partic. पुष्ट 1) adj. genährt, wohlgenährt, sich in einem gedeihlichen Zustande befindend AK. 3, 2, 46. मौसैर्विधो पुष्टः MBH. 1, 6032. गया हि चिरपुष्टेन दुःखसंवर्धितेन च R. 2, 53, 20. Spr. 1236. 2409. KĀTHĀS. 32, 160. BHĀĠ. P. 3, 1, 15. MĀRK. P. 50, 73. पुष्ट्याश्रयैः MBH. 5, 5959. BHARTṚ. 3, 98. सुपुष्टं कृतम् (शिप्रुगोपुगम्) PAÑĀV. 182, 13. पुष्टाङ्ग HIT. 17, 15. यदा मयेत भवेन हृष्टे पुष्टे बलं स्वकम् M. 7, 171. R. 1, 4, 87, 5, 14, 53, 5. R. GORR. 1, 54, 17. VEDĀNTAS. (Allah.) No. 81. ऋणोऽप्यस्वय पुष्टेभ्यः प्राज्ञापत शुकुत्काः gepflegt MBH. 12, 9303. reichlich HALĀJ. 4, 16. वृष्टि VARĀH. BRH. S. 9, 27, 24, 24. श्री 61, 1. M. 4, 231. reich an, gesegnet mit: कलागुणैः समृद्धो वसुना नातिपुष्टो ऽभवत् DAÇAK. in BENF. Chr. 184, 14. volltönend: हृष्टपुष्टस्वैरेस्तत्र द्विजेन्नेर्वत्सुभाषितैः HARIV. 14063. उवाच वचनं सम्यक् हृष्टपुष्टदान्तरम् 14124. vollkommen, vollständig; ऋ० unvollständig, mangelhaft: अतिदुष्टपुष्टार्थत्वादयः SĀH. D. 7, 19. ऋपुष्टार्थं n. Bez. eines rhetorischen Fehlers: प्रकृतानुपुष्कार्यमपुष्टार्थं तदुच्यते PRATĀPAR. 61, a, 2. Beispiel: व्यर्थाष्टार्था-र्धबाहूनाममीषामिदंशो दशाम्, wo die Umschreibung ऋष्टार्था die Hälfte der Hälfte von acht für zwei getadelt wird. Vgl. काक०, दिवा०, धाङ्क०, पर०, वाक्युष्टा. — 2) n. was Jmd herangewachsen, gedeihen ist: Erwerb, Besitz, Habe, Wohlstand (vorzugsweise an Lebendem: Kindern, Vieh u. s. w.) RV. 1, 103, 5. यथा शमसंद्धिपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं प्रामै ऋस्मिन्नानुतरम् 114, 1. 162, 7. 2, 12, 4. 9, 53, 1. गोमदश्चावन्मयस्तु पुष्टम् AV. 18, 3, 61. आ पुष्टमेवा वसु 6, 79, 2. 4, 24, 7. 5, 3, 7. 7, 19, 1. 79, 3. 12, 1, 29. 14, 2, 27. VS. 18, 10, 20, 10, 26, 19. KĀUÇ. 72.

— caus. 1) aufziehen, auffüttern, ernähren; gedeihen machen, hegen, pflegen DBĪRTUP. 33, 77. MBH. 13, 2633. प्राणवद्वनयेद्दत्यान्स्वकायमिव पोषयेत् Spr. 1890. तं प्रभूतमांसादिविधाकरेण पोषयामासुः PAÑĀV. 192, 22. 191, 18. MĀRK. P. 28, 19. 78, 26. 125, 64. Spr. 867. DBĪRTĀNTAÇ. 77 bei HĀEB. 224. आण्डम् TBr. 1, 6, 2, 1. स नैपयत्स पोषयत् RV. 5, 9, 7. — 2) ernähren —, füttern lassen: स्वमपत्यज्ञातमन्यैर्द्विजैः परभूताः खलु पोषयन्ति ÇĀK. 118.

— अनु fortwährend gedeihen, erblihen: अनु वीरिरनु पुष्यास्म गोभिर्न्वश्वैरनु सर्वेण पुष्टेः VS. 26, 19. nach Jmd (acc.) gedeihen SHADY. Br. 3, 7. — परि, partic. परिपुष्ट gehegt, gepflegt: बीजाङ्कुरः सूक्ष्मः परिपुष्टो ऽभिरन्तितः Spr. 2316. gesegnet mit, reichlich versehen mit: त्रिष्वपैः परिपुष्टानो ज्ञीवनं नान्यथा भवेत् Verz. d. Oxf. H. No. 71, Çl. 3. धनविद्या० KULL. zu M. 3, 277. gesteigert: अनुच्छिन्नाः प्रत्युत परिपुष्टा एव भावाः IV. Theil.

स्थायिनः) SĀH. D. 76, 9. Vgl. परिपुष्टता. — caus. ernähren, hegen, pflegen Spr. 2602. Vgl. परिपोषक fig.

— प्र ernähren, füttern, unterhalten: (यः) स्वकुटुम्बमेवानुदिनं प्रपुष्नाति Bālg. P. 5, 26, 10. स्वप्राणान्यः परप्राणैः प्रपुष्नाति 1, 7, 87. प्रो त्ये ऋग्रयो ऽग्निषु विश्वं पुष्यन्ति वार्यम् RV. 5, 8, 6.

— वि, विपुष्ट s. bes., da hier eine Zusammensetzung mit dem fertigen partic. Statt findet.

— सम् zunehmen: कर्तुर्याति न गोचरं किमपि संपुष्नाति (विद्याध्ययनार्थ-नम्) BHARTṚ. 2, 13.

2. पुष् (= 1. पुष्) adj. in विश्व०.

3. पुष्, पुष्यति v. 1. für व्युष् theilen, vertheilen DBĪRTUP. 26, 106.

पुष् 1) adj. von 1. पुष् in प्रक०. — 2) m. N. pr. eines Veda-Lehrers HIOUEN-TSANG I, 75. — 3) f. आ eine best. Pflanze, = लाङ्गलिकी ÇABDAK. im ÇKDr. — Vgl. त्रिपुषा.

पुष्प adj. viell. wohlgepflegt, gedeihlich (von 1. पुष्: वंसग RV. 10, 106, 5. पुष्क ein zur Erklärung von पुष्कल angenommenes Wort im gaṇa सिध्मादि zu P. 5, 2, 97. Vgl. पौष्कजिति.

पुष्कर UNĀDIS. 4, 4. gaṇa वरणादि zu P. 4, 2, 82. n. Siddh. K. 249, b, 2, 1) n. blaue Lotusblüthe AK. 1, 2, 3, 40. 3, 4. 25. 188. H. 1161. an. 3, 579. fig. MED. r. 187. HALĀJ. 3, 57, 5, 72. यस्ते गन्धः पुष्करमविशेश AV. 12, 1, 24. 11, 3, 8. VS. 11, 29. TBr. 1, 2, 4, 4. ÇAT. Br. 4, 1, 5, 16. स्रजं च यौ विश्वयः पुष्करस्य MBH. 1, 731. 7, 1014. 12, 6800. fig. 9816. 13, 4508. 4554. fig. HARIV. 2224. 7070. R. 2, 95, 14. SUÇR. 1, 211, 13. 299, 4. 2, 207, 2. पुष्करेत्तण MBH. 1, 4704. 8010. 5, 3533. R. 2, 61, 8. ० पलाश KĀHIND. UP. 4, 14, 3. यथा च पर्णो पुष्करम्यावसिक्तं (lies: पुष्कर०) जलं न तिष्ठेत् MBH. 3, 255. ० पत्र Spr. 21. ० पत्रनेत्र RAGH. 18, 29. शतपुष्करा (स्रक्) ĀÇV. Çr. 9, 9. PAÑĀV. Br. 18, 9, 7. R. 4, 21, 25. 6, 4, 53. 112, 79. MBH. 3, 11853. Bildliche Bez. des Herzens: पितरं सर्वभूतेषु पुष्करे निभूतं विदुः MBH. 5, 1790. AMRTAVINDUP. in Ind. St. 2, 61 (Irrthum nach WEBER). — 2) ein best. heilkräftiges Kraut, Costus speciosus oder arabicus AK. 2, 4, 5, 11. 3, 4, 25, 188. H. an. MED. HALĀJ. 5, 72. Vgl. पुष्करामूल. — 3) n. Kopf des Löffels: निषिक्तं पुष्करे मधु RV. 8, 61. 11. विश्वे देवाः पुष्करे त्वादत्त 7, 33, 11. Hierher auch wohl: त्वामग्ने पुष्करादध्यथवा निरमन्थत 6, 16, 18. स्रुचं प्रादपठो प्रत्यक्पुष्कराम् AIT. Br. 7, 5. KĀTJ. Çr. 1, 3, 37. 38. 9, 2, 13. 26, 1, 30. GRHJASĀHĀ. 1, 32. — 4) n. die Spitze des Elefantenrüssels AK. H. 1224. H. an. MED. HALĀJ. 2, 64. 5, 72. VARĀH. BRH. S. 66, 7, 8. ० मुख ÇIÇ. 5, 30. (शाखाम्) पुष्कराग्नेषां कृष्याभाङ्गौ PAÑĀV. 80, 8. — 5) n. das Fell auf der Trommel, = वाद्यभाण्डमुख, तूर्यास्य, तूर्यवक्र AK. 3, 4, 25, 188. H. an. MED. HALĀJ. 5, 72. तूर्यैराकृतपुष्करैः RAGH. 17, 11. पुष्करेष्वाकृतेषु MEGH. 67. MĀLAV. 20. Die beiden letzten Stellen könnten auch zu 5. gezogen werden. — 6) m. eine Art Trommel (vgl. पुष्कल) DBĀH. bei WILS. पणवाः पुष्कराश्वैव मृदङ्गाः पट्टानकाः MĀRK. P. 106, 61. — 7) m. eine Art Schlange H. an. MED. — 8) m. eine Krantchart, Ardea sibirica (wie alle Synonyme von Lotus) AK. 2, 5, 22. H. 1328. H. an. MED. HALĀJ. 2, 89. PAÑĀV. 137, 4. — 9) n. Klinge eines Schwertes AK. TRIK. 3, 3, 361. H. an. MED. HALĀJ. 5, 72. — 10) n. Schwertscheide MATHURĀÇA zu AK. ÇKDr. — 11) n. Pfl., = काण्ड H. an. MED. — 12) n. Köfig ÇABDĀRTAK. bei WILS. — 13) n. Luft, Luftstraum NAIÇH. 1, 3. NIA. 5, 14.